परमात्म ऊर्जा

अच्छा, एक मात्रा के अन्तर का शब्द है- शिव के बजाए शव को देखते हैं। शव को देखने से शिव को भूल जाते हैं। शिव शब्द बदलकर विष बन जाता है। विष, विकारों की विष। एक मात्रा के अन्तर से उल्टा बन जाने से विष भर जाता है। उसका फिर परिणाम भी ऐसा ही निकलता है। उल्टे हो गये तो परिणाम भी ज़रूर उल्टा ही निकलेगा। इसलिए कब भी शव को न देखो अर्थात् इस देह को न देखो। इनको देखने से अथवा शरीर के भान में रहने से लॉ ब्रेक होता है। अगर इस लॉ में अपने आपको सदा कायम रखो कि शव को नहीं देखना है; शिव को देखना है तो कब भी कोई बात में हार नहीं होगी, माया वार नहीं करेगी। जब माया वार करती है तो हार होती है।

अगर माया वार ही नहीं करेगी तो हार कैसे होगी? तो अपने आपको बाप के ऊपर हर संकल्प में बलिहार बनाओ तो कब हार नहीं होगी। संकल्प में भी अगर बाप के ऊपर बलिहार नहीं हो, तो संकल्प कर्म में आकर हार खिला देते हैं। इसलिए अगर लॉ मेकर अपने को समझते हो तो कभी भी इस लॉ को ब्रेक नहीं करना। चेक करो- यह जो संकल्प उठा वह बाप के ऊपर बलिहार होने योग्य है? कोई भी श्रेष्ठ देवताएं होते हैं, उनको कभी भी कोई भेंट चढ़ाते हैं तो देवताओं के योग्य भेंट चढ़ाते हैं, ऐसे वैसे नहीं चढ़ाते। तो हर संकल्प बाप के ऊपर अर्थात् बाप के कर्त्तव्य के ऊपर बलिहार जाना है। यह चेक करो- जैसे ऊंच ते ऊंच बाप है वैसे ही संकल्प भी ऊंच हैं जो भेंट चढ़ावें? अगर व्यर्थ संकल्प, विकल्प हैं तो बाप के ऊपर बलि चढ़ा नहीं सकते, बाप स्वीकार कर नहीं सकते। आजकल शक्तियों और देवियों का भोजन होता है तो उसमें भी शुद्धिपूर्वक भोग चढ़ाते हैं। अगर उसमें कोई अशुद्धि होती है तो देवी भी स्वीकार नहीं करती है, फिर वह भक्तों को महसूसता आती है कि देवी ने हमारी भेंट स्वीकार नहीं की। तो आप भी श्रेष्ठ आत्मायें हो। शुद्धि पूर्वक भेंट नहीं है तो आप भी स्वीकार नहीं करते हो।

ऊंच ते ऊंचे बाप के आगे क्या भेंट चढ़ानी है वह तो समझ सकते हो। हर संकल्प में श्रेष्ठता भरते जाओ, हर संकल्प बाप और बाप के कर्त्तव्य में भेंट चढ़ाते जाओ। फिर कब भी हार नहीं खा सकेंगे।

बूढ़ी माँ और बेटा

कथा सरिता

यह कहानी है बेंगलुरू में रहने वाले रमेश की। रमेश अपने परिवार के साथ बैंगलोर में रहा करता था। परिवार में रमेश की माँ और रमेश की पत्नी तथा दो बच्चे भी रहा करते थे।

रमेश की माँ सावित्री बहुत ही बूढ़ी हो चुकी थी और अपने पति के गुजर जाने के बाद बहुत अकेली भी। रमेश एक अमीर आदमी था पर वह अपनी माँ के इस बुढ़ापे की उम्र में उनकी ज़रूरतों को समझ पाने में असमर्थ था।

वह भौतिक ज़रूरतें पूरी कर पाता था मगर इमोशनल स्पोर्ट नहीं दे पाता था, जिसकी उसकी माँ को इस उम्र में बहुत ज़रूरत थी। रमेश का घर चार मंज़िल का था। उसने अपनी माता के लिए तीसरे मंज़िल में कमरा तैयार कर रखा था। उस कमरे में सारी सुख-सुविधाएं थी। सभी सुख-सुविधा होने के बावजूद भी उसकी माँ हमेशा परेशान और मायूस रहा करती थी। वह अकेली रहती थी उसके साथ बात करने वाला कोई नहीं था, वह अपने परिवार का साथ चाहती थी।

पर यह बात रमेश को समझ नहीं आ रही थी। रमेश और उसकी पत्नी लीला को यह लगता था कि हम तो अपनी बूढ़ी माँ को सारी सुख-सुविधाएं उपलब्ध करवाते हैं। किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है फिर भी यह सासू माँ हमेशा ही नाराज़, परेशान और ना खुश क्यों रहती है, अक्सर इस बुढ़ापे में वह हमसे क्या चाहती हैं? ऐसा सावित्री की बहू लीला ने सोचा। एक दिन सावित्री ने अपने बेटे रमेश से ज़िद की कि उसका बिस्तर पहली मंज़िल में लगवा दे।

माँ के कई दफा कहने पर रमेश ने उनका बिस्तर नीचे मंज़िल में लगवा दिया। अब सावित्री नीचे मंज़िल में खुश रहने लगी। उसके स्वभाव में बेहद परिवर्तन आने लगा। यह देख रमेश हैरान हुआ कि ऊपर तीसरी मंज़िल में भी उन्हें हर एक सुख-सुविधा मैंने दे रखी थी। फिर भी वह हमेशा नाखुश और डिप्रेस्ड रहती थी। पर यह ऐसा क्या हुआ जो अब माँ हंसने लगी है, खुश रहने लगी है। दरअसल सावित्री की खुशी का राज़ पहली मंज़िल में अपने पोते-पोतियों को आते-जाते देख और उनके साथ खेल पाने की थी।

यह खुशी उसे तीसरी मंज़िल में रहकर नहीं मिलती थी क्योंकि वहाँ बच्चों का और परिवार का आना-जाना बहुत कम था और वो ना ही इतनी सीढ़ियां चढ़-उतर सकती थी। अब सावित्री के पोते-पोतियां भी उसके साथ खेलते थे। उनके साथ खेलते-खेलते अब वह धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगी और सावित्री के चेहरे पर पहले जैसी खुशी वापस आने लगी। वह अपने बच्चों के लिए कभी पकोड़ियां तो कभी मालपुए बनाया करती थी।

अब बच्चे भी अपनी दादी के साथ खुश रहने लगे। यह सब देख रमेश आश्चर्यचकित रह गया कि माँ की तबीयत में इतना सुधार आखिर कैसे? जो यह महंगी-मंहगी दवाईयां न कर पाई बल्कि परिवार के साथ थोड़ा-सा समय बिताने पर ही उनकी सेहत में बहुत ज़्यादा सुधार दिखने लगा। अब वह यह बात समझ गया कि बुढ़ापे में हमें भौतिक सुख-सुविधाओं से ज़्यादा अपनों का प्यार और अपने परिवार के साथ की ज़रूरत होती है।

बूढ़े और बच्चे एक समान होते हैं उन्हें बच्चों की तरह प्यार और देखभाल की आवश्यकता होती है। रमेश को अपने किए पर पछतावा हुआ, उसे घमंड था कि वह तो अपनी माँ को हर एक सुख-सुविधा देता है। पर इस भौतिक सुविधाओं के दिखावे के चक्कर में वह अपनी माँ को असली सुख-सुविधा देना भूल गया था जो था अपने माता-पिता का बुढ़ापे में हाथ थामना जैसे उन्होंने बचपन में हमारा थामा था।

सीहोर-म.प्र.। केंद्रीय कारागृह में कैदियों को 'कर्म गति और व्यवहार शुद्धि' विषय पर राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू ने सम्बोधित किया। इस मौके पर स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र की ब्र.कु. पंचशिला बहन, ब्र.कु. संतोष बहन, जेल सहायक अधीक्षिका ज्योति तिवारी, जेल के कार्यवाहक प्रमुख मुख्य प्रहरी मोहम्मद अजहर, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. महेश भाई, ब्र.कु. आकाश भाई आदि उपस्थित रहे।

बरौली-गोपालगंज(बिहार)। सुप्रसिद्ध अभिनेता पंकज त्रिपाठी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. पुतुल बहन।

छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा टाटा मोटर्स आनंद ग्रुप में कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में मुख्य वक्ता ऑस्ट्रेलिया मेलबर्न से आईं ब्र.कु. अनन्या बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. रीमा बहन, छतरपुर आनंद ग्रुप के जीएम उत्कर्ष कुशवाहा, एचआर अंकित अग्रवाल तथा समस्त कर्मचारीगण।

नागठाणे-सातारा(महा.)। गणतंत्र दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'मेरा भारत व्यसनमुक्त भारत, मेरा महाराष्ट्र व्यसनमुक्त महाराष्ट्र' अभियान के तहत चित्र रथ युक्त व्यसनमुक्ति रैली का आयोजन किया गया। इस दौरान सातारा के पालकमंत्री तथा महाराष्ट्र के कायदा सुव्यवस्था मंत्री शंभूराजे देसाई, जिलाधिकारी जितेंद्र डुडी, पुलिस अधीक्षक समीर शेख, मुख्य कार्यकारी अधिकारी ज्ञानेश्वर खिलारी सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

विदिशा ए-33 मुखर्जी नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा साईं कॉलेज ऑफ नर्सिंग पैरामेडिकल साइंसेज़ में 'सकारात्मक युवा विकसित भारत का आधार' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. नंदिनी बहन, ब्र.कु. अनु बहन, कॉलेज के डायरेक्टर संतोष सिंह बघेल, प्रिंसिपल अमित प्रताप सिंह परिहार, शिक्षकगण व विद्यार्थीगण।

सरिया-छ.ग.। अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र में राम दरबार की चैतन्य झाँकी सजाई गई। इस कार्यक्रम में ब्र.कु. सुनयना बहन, नगर पंचायत अध्यक्ष स्वप्निल स्वर्णकार, ब्र.कु. भुवनेश्वरी बहन सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।